‘विज्ञानिका’ कार्यक्रम में विज्ञान संचार एवं प्रसार का समारोह : विज्ञान साहित्य महोत्सव 2025

Celebration of Science Communication and Outreach at Vigyanika: Science Literature Festival 2025

आयोजन स्थल/Venue : पंचकुला, हरियाणा, **8-9 दिसंबर, 2025** / Panchkula, Haryana, **8-9 December 2025**

11 वें भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव (आई.आई.एस.एफ.), 2025 के संयोजक संस्थान के रूप में भारतीय उष्णदेशीय मौसम विज्ञान संस्थान (आई.आई.टी.एम.), पुणे ने सी.एस.आई.आर. -निस्पर, नई दिल्ली; विज्ञान भारती (विभा) और पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ के सहयोग से पंचकुला, हरियाणा में दि. 8-9 दिसंबर, 2025 के दौरान **‘विज्ञानिका’ : विज्ञान साहित्य महोत्सव 2025** का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इस दो दिवसीय कार्यक्रम ने विज्ञान, साहित्य, भाषा और रचनात्मक संचार के संगम का उत्सव मनाया, जिसमें देश भर के प्रमुख विज्ञान संवादकों, वैज्ञानिकों, संपादकों, विद्वानों और विज्ञान कवियों को मंच प्रदान किया गया। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य बहुभाषी और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध विज्ञान संचार के माध्यम से समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण की संस्कृति को सुदृढ़ करना और उसे व्यापक रूप से प्रोत्साहित करना था।

As the convening institute for the 11th India International Science Festival (IISF) 2025, the Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM), Pune, in collaboration with CSIR-NIScPR, New Delhi; Vijnana Bharati (VIBHA); and Panjab University, Chandigarh, successfully organised ‘Vigyanika: Science Literature Festival 2025’ on December 8-9, 2025. The two-day festival celebrated the convergence of science, literature, language, and creative communication, bringing together leading science communicators, scientists, editors, scholars, and science poets from across the country. The event aimed to strengthen the culture of scientific temper through multilingual and culturally rooted forms of science communication.

दिनांक 8 दिसंबर को "भारतीय विज्ञान विमर्श में साहित्य और संचार माध्यमों की भूमिका" विषय पर ‘विज्ञानिका’ समारोह के उद्घाटन सत्र का शुभारंभ हुआ। इस सत्र में भारत के वैज्ञानिक विमर्श को आकार देने में साहित्य और संचार मंच की भूमिका का समन्वेषण किया गया। डॉ. परमानंद बर्मन, सी.एस.आई.आर.-निस्पर ने ‘विज्ञानिका’ का एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। विभा के डॉ. नील सरोवर भावेश ने भारतीय संदर्भ में विज्ञान के संचार के महत्व के संदर्भ में चर्चा की। आईआईएसएफ-विज्ञानिका कार्यक्रम के समग्र प्रबंधन में आईआईटीएम, पुणे के डॉ. अतुल कुमार श्रीवास्तव, वैज्ञानिक-ई तथा श्री हंस प्रताप सिंह, हिंदी अधिकारी ने मुख्य समन्वयक-आईआईटीएम के रूप में महत्त्वपूर्ण भूमिका का सफलतापूर्वक निर्वहन किया ।

The festival opened on 8th of December with an inaugural session titled “*Bhartiya Vigyan Vimarsh me Sahitya aur Sanchar Madhyamo ki Bhoomika*”.
The session explored the role of literature and communication platforms in shaping India’s scientific discourse. Dr. Paramananda Barman, CSIR-NIScPR offered an overview of Vigyanika. Dr. Neel Sarovar Bhavesh from VIBHA spoke about the significance of communicating science within the Indian context. Dr. Atul Kumar Srivastava, Scientist-E, and Mr. Hans Pratap Singh, Hindi Officer from IITM, Pune, successfully played a significant role as IITM’s lead coordinators in the overall management of the Vigyanika program.

विज्ञानिका Vigyanika

विज्ञान भारती (विभा) के महासचिव श्री विवेकानंद पई ने मुख्य वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने विज्ञान संचार में भारतीय दृष्टिकोण के महत्व पर चर्चा की । उन्होंने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत के उल्लेखनीय योगदान पर भी प्रकाश डाला। पंजाब विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. अरुण कुमार ग्रोवर ने भारत के वैज्ञानिक संस्थानों और विज्ञान पत्रकारिता के इतिहास को प्रतिबिंबित किया। डॉ. गीता वाणी रायसम, निदेशक, सी.एस.आई.आर.-निस्पर ने भारतीय संदर्भ में विज्ञान को संचारित करने के महत्व पर बल दिया तथा इस क्षेत्र में सी.एस.आई.आर.- निस्पर के योगदान के बारे जानकारी दी। अंत में, एन.सी.एस.टी.सी., डी.एस.टी. की प्रमुख डॉ. रश्मि शर्मा ने आज की विज्ञान संचार पद्धतियों पर चर्चा की। उनके विचारों ने पूरे देश में सुलभ और संदर्भ-आधारित विज्ञान संचार की निरंतर आवश्यकता को रेखांकित किया । आईआईटीएम के डॉ. अतुल कुमार श्रीवास्तव ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

Shri Vivekananda Pai, General Secretary of VIBHA, delivered the keynote address. He discussed the importance of an Indian narrative in SciComm. He also highlighted the notable contributions of India in Science and Technology. Prof. Arun Kumar Grover, Former Vice-Chancellor of Panjab University, reflected on the history of India's scientific institutions and science communication. Dr. Geetha Vani Rayasam, Director, CSIR -NIScPR highlighted the importance of communicating science in Indian context and mentioned about the contribution of CSIR-NIScPR in this domain. Finally, Dr. Rashmi Sharma, Head, NCSTC, DST, talked about the present day science communication approaches. Their insights underscored the continuing need for accessible and contextually grounded science communication across the country. Dr. Atul Kumar Srivastava, IITM presented the Vote of Thanks.

दिन के अंतिम सत्र में आयोजित विज्ञान कवि सम्मेलन में कविता और विज्ञान का जीवंत संगम प्रस्तुत किया गया, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि रचनात्मक अभिव्यक्ति वैज्ञानिक विचारों को कैसे उजागर कर सकती है।" प्रतिष्ठित विज्ञान कवियों में सुश्री राधा गुप्ता, प्रोफेसर नीरा राघव, श्री यशपाल सिंह 'यश', श्री टीएसआरएस संदीप और डॉ अनुराग गौड़ जैसे प्रसिद्ध विज्ञान कवियों सहित सी.एस.आई.आर.-निस्पर के पूर्व निदेशक प्रोफेसर मनोज कुमार पटारिया, आईआईटी इंदौर के प्रोफेसर राजेश कुमार; *इलेक्ट्रॉनिकी आपके लिए* के सहयोगी संपादक श्री मोहन सगोरिया शामिल थे। उनकी कविताओं ने यह दर्शाया कि विज्ञान के साथ जनसंपर्क के लिए कविता एक प्रभावी माध्यम हो सकती है।

Later that day, the Vigyan Kavi Sammelan showcased a vibrant blend of poetry and science, highlighting how creative expression can illuminate scientific ideas. Esteemed science poets included Prof. Manoj Kumar Patairiya, former Director of CSIR-NISCAIR; Prof. Rajesh Kumar of IIT Indore; Sh. Mohan Sagoria, Associate Editor of Electroniki Aapke Liye; along with celebrated science poets Ms. Radha Gupta, Prof. Neera Raghav, Mr. Yashpal Singh 'Yash', TSRS Sandeep, and Dr. Anurag Gaur. Their poetries illustrated the power of poetry as a tool for public engagement with science.

'विज्ञानिका' के दूसरे दिन *"विज्ञान से समृद्धि - आत्मनिर्भर भारत के लिए"* नामक शीर्षक से एक वैज्ञानिक सत्र आयोजित किया गया, जिसमें पारंपरिक ज्ञान के संचार और राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता की प्रगति में इसकी भूमिका पर ध्यान आकर्षित किया गया। इस सत्र में डॉ. अरविंद रानाडे, निदेशक, एन.आई.एफ़. जैसे महत्वपूर्ण व्यक्ति

विज्ञानिका Vigyanika

की गरिमामयी उपस्थिति प्राप्त हुई। उन्होंने बौद्धिक संपदा (आईपी) फ्रेमवर्क के माध्यम से पारंपरिक ज्ञान की सुरक्षा तथा ज्ञान रखने वालों लोगों को उचित पहचान दिलाने की आवश्यकता पर बल दिया। सी.एस.आई.आर.-टी.के.डी.एल. की प्रमुख, डॉ. विश्वजननी जे. सत्तिगेरी ने पारंपरिक ज्ञान के लिए नीतियों को प्रलेखित, प्रसारित एवं कार्यान्वित करने के महत्व पर बल दिया। डॉ. एन. श्रीकांत, डी.डी.जी., सी.सी.आर.ए.एस. ने पारंपरिक ज्ञान के मूल्य-संवर्धन एवं सटीक संचार तथा इसके वैज्ञानिक आधार के महत्व पर प्रकाश डाला। अंत में, डी.बी.टी.-बी.आई.आर.ए.सी. की वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी डॉ. कनुप्रिया वशिष्ठ ने भारत में जीव विज्ञान एवं जैव प्रौद्योगिकी नवाचारों पर चर्चा की। चर्चा में भारत के पारंपरिक ज्ञान की समृद्ध विरासत, इसे समकालीन वैज्ञानिक और नवप्रवर्तन पारिस्थितिकी तंत्र में एकीकृत करने के महत्व और प्रभावी संचार पर बल दिया गया।

The second day of Vigyanika featured a scientific session titled *Vigyan Se Samruddhi - For Atmanirbhar Bharat*, which focused on traditional knowledge communication and its role in advancing national self-reliance. The session brought together key figures such as Dr. Arvind Ranade, Director, NIF who highlighted the need for protecting traditional knowledge through intellectual property (IP) frameworks, and ensuring proper recognition to knowledge holders. Dr. Viswajanani J. Sattigeri, Head, CSIR-TKDL emphasized the importance of documenting, disseminating and implementing policy for traditional knowledge. Dr. N. Srikanth, DDG, CCRAS highlighted the importance of value-addition and accurate communication of traditional knowledge and its scientific basis. Lastly, Dr. Kanupriya Vashishth, Senior Program Officer, DBT-BIRAC talked about life sciences and biotech innovations in India. The discussion emphasized India’s rich heritage of traditional knowledge, the importance of integrating it into contemporary scientific and innovation ecosystems, and effective communication.

‘अपनी भाषा अपना विज्ञान’, विषय पर पैनल चर्चा सत्र में विज्ञान संचार और प्रसार में भारतीय भाषाओं की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला गया। वक्ताओं में प्रो. अरुण कुमार ग्रोवर, पूर्व कुलपति, पंजाब विश्वविद्यालय ; श्री देबब्रत घोष, संपादक, साइंस इंडिया; डॉ. मनीष मोहन गोरे, संपादक, विज्ञान प्रगति; डॉ. एच. एस. सुधीरा, निदेशक, रिसर्च मैटर्स, गुब्बी लैब्स तथा डॉ. ननाओचा शर्मा, निदेशक, बी.आर.आई.सी.-आई.बी.एस.डी., मणिपुर सम्मिलित थे। पैनल ने इस बात पर प्रकाश डाला कि अपनी भाषा में संचारित विज्ञान समावेशिता, समझ और गहरी सार्वजनिक भागीदारी को बढ़ावा देता है।

The *Apni Bhasha Apna Vigyan*, a panel discussion highlighted the critical role of Indian languages in science communication and outreach. Speakers included Prof. Arun Kumar Grover,Former VC ,Panjab University ; Shri Debobrat Ghose, Editor, Science India; Dr. Manish Mohan Gore, Editor, Vigyan Pragati; Dr. H. S. Sudhira, Director, Research Matters, Gubbi Labs; and Dr. Nanaocha Sharma, Director, BRIC-IBSD, Manipur. The panel highlighted that science communicated in one’s own language fosters inclusivity, understanding, and deeper public engagement.

विज्ञानिका का समापन एक इंटरैक्टिव सत्र ‘विज्ञान संचार के रोचक और रचनात्मक तरीके’ के साथ हुआ, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों द्वारा नवाचारी जनसंपर्क रणनीतियाँ प्रस्तुत की गईं।

विज्ञानिका Vigyanika

'विज्ञान संचार के आकर्षक और रचनात्मक माध्यम' विषय पर संवादात्मक सत्र के साथ 'विज्ञानिका' कार्यक्रम का समापन किया गया, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों द्वारा नवाचारी जनसंपर्क रणनीतियाँ प्रस्तुत की गईं । सी.एस.आई.आर.-सी.एफ.टी.आर.आई. के पूर्व मुख्य वैज्ञानिक श्री. कोलेगला शर्मा; इसरो में क्षमता निर्माण और जन जागरूकता के निदेशक श्री. जी. हरिकृष्णन; जे.एन.यू. के सहायक प्रोफेसर डॉ. सौरभ शर्मा तथा वन्यजीव चलचित्रकार एवं फिल्म निर्माता सुश्री पूजा राठौड़ ने कथा-कथन, ऑडियो-विजुअल मीडिया, क्षेत्रीय भागीदारी और वैज्ञानिक विवरणों के माध्यम से जन जागरूकता पर अपने बहुमूल्य दृष्टिकोण साझा किए। उनके विचारों ने भारत में विज्ञान संचार के बदलते परिदृश्य को उजागर किया।"

Vigyanika concluded with an interactive session titled *Engaging and Creative Ways of Communicating Science* showcased innovative outreach strategies from experts across diverse fields. Sh. Kollegala Sharma, former Chief Scientist at CSIR-CFTRI; Mr. G. Harikrishnan, Director, Capacity Building and Public Outreach at ISRO; Dr. Saurabh Sharma, Asst. Prof, JNU; and Ms. Pooja Rathod, Wildlife Cinematographer and Filmmaker, shared approaches that spanned storytelling, audio-visual media, field engagement, and public-facing scientific narratives. Their insights highlighted the evolving landscape of science communication in India.

ईआईएसएफ 2025 के हिस्से के रूप में, विज्ञानिका ने विज्ञान और समाज के बीच की दूरी को कम करने की अपनी प्रतिबद्धता को पुनः सुदृढ़ किया । साहित्य, कला, भारतीय भाषाओं और रचनात्मक माध्यमों के जरिए इस आयोजन ने यह प्रदर्शित किया कि सांस्कृतिक रूप से आधारित विज्ञान संचार एक वैज्ञानिक रूप से जागरूक और प्रवृत्त समाज के निर्माण में कितना परिवर्तनकारी हो सकता है।

As part of IISF 2025, Vigyanika reinforced its commitment to bridging the gap between science and society. Through literature, art, Indian languages, and creative media, the event demonstrated the transformative potential of culturally grounded science communication in fostering a scientifically informed and engaged society.

फोटो / Photo

विज्ञानिका Vigyanika

विज्ञानिका Vigyan

WELCOME TO
INDIA INTERNATIONAL
SCIENCE FESTIVAL 2025
VIGYAN SE SAMRUDDHI: FOR AATMANIRBHAR BHARAT
Innovation, Aatmanirbharta, India for Global Good

WELCOME TO
INDIA INTERNATIONAL
SCIENCE FESTIVAL 2025
INDIA INTERNATIONAL SCIENCE FESTIVAL 2025

WELCOME TO
INDIA INTERNATIONAL
SCIENCE FESTIVAL 2025
INDIA INTERNATIONAL SCIENCE FESTIVAL 2025

WELCOME TO
INDIA INTERNATIONAL
SCIENCE FESTIVAL 2025
WELCOME TO
INDIA INTERNATIONAL
SCIENCE FESTIVAL 2025
VIGYAN SE SAMRUDDHI: FOR AATMANIRBHAR BHARAT

विज्ञानिका Vigyanika